गोडावण की गणना विवादों में, हमारे यहां कितने- 83 या 60?

खतरे में अस्तित्व राज्य पक्षी की गणना के नए आंकड़े- 2012 में 94 थे, 2013 में घटकर 83 हुए • इस संख्या पर भी विशेषज्ञों ने उठाए सवाल

लक्ष्मी प्रसाद पंत | जयपुर

राजस्थान के राज्य पक्षी गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड) की संख्या उसके अस्तित्व की तरह ही डगमगा रही है। गोडावण की गिरती तादाद की चिंता तो जस की तस है, नया विवाद अब असल संख्या को लेकर है।

नए आंकड़ों के अनुसार राज्य में 83 गोडावण हैं। पिछले वर्ष ये 94 थे। बुरी खबर यह कि इस घटी संख्या पर भी सवाल उठ गए हैं। राज्य के पूर्व पीसीसीएफ आर एन मेहरोत्रा का दावा है कि सिर्फ 60 ही गोडावण बचे हैं। तर्क यह है कि सर्दियों की गणना में 94 गोडावण थे लेकिन मई की गणना में 60-64 ही बचे हैं। संख्या में इतनी भारी गिरावट खतरनाक संकेत हैं। सरिस्का के बाघों की तरह कहीं गोडावण भी खत्म न हो जाएं।

असल संख्या कितनी : दावे इनके और उनके

'83 गोडावण हैं इस समय राजस्थान में'

• मई की गणना में 83 गोडावण गिने गए हैं। गोडावण संकट में हैं ये सही है लेकिन बचाने के लिए 13 करोड़ के रिकवरी प्लान को मंजूरी मिल गई है। चिंता यह है कि गोडावण के हैबिटाट नष्ट होते जा रहे हैं।

ए एस बरार,
चीफ वाइल्डलाइफ वार्डन

'झूठ...सिर्फ 60 बचे हैं, सच्चाई छिपाई जा रही है'

• सिर्फ 60 से 64 ही बचे हैं गोडावण। सच्चाई छिपाई जा रही है। सरिस्का के बाघों की तरह यहां भी सही संख्या छिपाई जा रही है। कैप्टिव ब्रीडिंग और गोडावण की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए रेडियो-टैगिंग का प्रस्ताव भी फाइलों में ही है।

आर एन मेहरोत्रा,
पूर्व पीसीसीएफ, राजस्थान

'योजना पर अमल नहीं, राजस्थान खो देगा राज्य पक्षी'

• हमने गोडावण को बचाने के लिए राजस्थान सरकार को कई योजनाएं बनाकर दी हैं लेकिन अभी तक कोई अमल नहीं हुआ है। इसमें कैप्टिव ब्रीडिंग, रेडियो टैगिंग और बस्टर्ड रिकवरी प्रोग्राम शामिल हैं। अगर इन योजनाओं पर काम नहीं हुआ तो राजस्थान अपना राज्य पक्षी खो देगा।

डॉ. असद रहमानी, डायरेक्टर, बांबे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, मुंबई

यूं घटे गोडावण

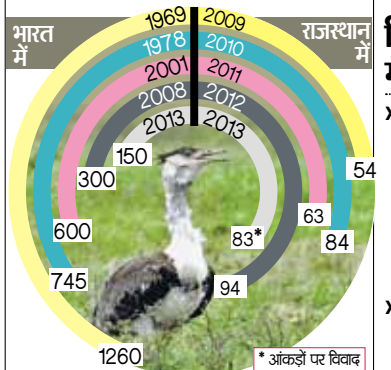

गोडावण यानी: दुनिया का उड़ने वाला सबसे बड़ा पक्षी, घास मैदानों व मरुस्थल के इकोसिस्टम की रीढ़, धोरों का चीता भी कहा जाता है।

जमीनी हकीकत

सिर्फ डेजर्ट नेशनल पार्क में बचे हैं गोडावण

» सोरसण गोडावण सेंचुरी(बारां), हनुमानगढ़, कोटा और बीकानेर में तो गोडावण खत्म ही हो चुका है। जबकि नसीराबाद में इनकी संख्या मात्र दो रह गई है। बांबे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के अनुसार राजस्थान में 2001 में गोडावण की संख्या 400 के करीब थी जो 83 पर आ गई है। इस पर भी विवाद है।

» 2011 में गोडावण को बचाने के लिए बनाया गए कैप्टिव ब्रीडिंग प्रोजेक्ट का कोई अता-पता नहीं। वाइल्डलाइफ इंस्टीट्यूट, देहरादून के गोडावण के प्रजनन, बच्चों, पर्यावास (हैबिटाट), सीजनल मूवमेंट व मौत की जानकारी के लिए बनाए गए सैटेलाइट संबंधी प्रोग्राम भी सिरे नहीं चढ़े।

3 राज्य • 65 संस्करण | दैनिक भास्कर मध्यप्रदेश • छत्तीसगढ़ • राजस्थान • नई दिल्ली • पंजाब • चंडीगढ़ • हरियाणा • हिमाचल प्रदेश • उत्तराखंड • झारखंड • जम्मू- कश्मीर | दिव्य भास्कर गुजरात • महाराष्ट्र | दिव्य मराठी महाराष्ट्र | DNA मुंबई • बेंगलुरु • पुणे • अहमदाबाद • जयपुर • इंदौर | 94.3 MY FM 7 राज्य • 17 स्टेशन